मीरा के पद

भोर और बरखा अर्थात् प्रभात और वर्षा इनसे संबंधित पदों में मीरा बाई ने अपनी अनन्य भक्ति व प्रेम कृष्ण के प्रति दर्शाया है कि कैसे प्रभात के समय वे श्रीकृष्ण को उठाना चाहती हैं और वर्णन करती हैं कि घर-घर के दरवाजे खुल गए हैं, गोपियाँ दही बिलो रही हैं, ग्वाल बाल सब गौओं को चराने जा रहे हैं व दूसरे पद में वर्षा ऋतु का वर्णन है कि बादलों के आते ही मीरा को भनक पड़ती है कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं। चारों तरफ शीतल और सुहावनी पवन चलती है। ऐसे में मीरा जी कृष्ण के आने की खुशी में मंगल गीत गाना चाहती हैं।

☞ 1

जागो बंसीवारे ललना!
जागो मोरे प्यारे!
रजनी बीती, भोर भयो है, घर-घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत, सुनियत हैं कंगना के झनकारे।।
उठो लालजी! भोर भयो है, सुर-नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल-बाल सब करत कुलाहल, जय-जय सबद उचारै।।
माखन-रोटी हाथ मँह लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयाँ को तारै।।

शब्दार्थ : **ललना**–लाल, पुत्र। **जागो**–जाग जाओ। **मोरे**–मेरे। **रजनी**–रात। **बीती**–बीत गई। भोर–प्रातः। **भयो**–हो गई। **खुले**–खुल गए हैं। **किंवारे**–किवाड़। **मथत**–बिलौना। **सुनियत**–सुनो। **कंगना**–चूड़ियाँ। झनकारे–झनकार। **सुर**–देवता। **नर**–मनुष्य। **ठाढ़े**–खड़े। **द्वारे**–द्वार। **ग्वाल-बाल**–ग्वालों के बच्चे। **कुलाहल**–शोर। सबद–शब्द। **उचारै**–बोलते हैं। **माखन-रोटी**–माखन और रोटी। **मँह**–में। **लीनी**–ली हुई। **गउवन**–गौओं की। **रखवारे**–रक्षा करने वाले। **सरण**–शरण। **तारै**–उद्धार।

व्याख्या–मीरा अपने मधुर स्वर में श्रीकृष्ण को भोर के समय जगा रही है और कहती है कि हे मेरे वंशीवाले प्यारे कृष्ण जाग जाओ अर्थात् निद्रा त्याग दो। रात बीत गई है, प्रातः का समय हो गया है। सभी घरों के दरवाजे खुल

गए हैं। गोपियों के हाथों के कंगनों की झंकार से पता चलता है कि वे दही बिलो रही हैं और तुम्हारे लिए मन भावन मक्खन निकाल रही हैं। प्रिय कृष्ण देखो! तुम्हें जगाने के लिए द्वार पर सभी देव और मानव जन खड़े हैं जो तुम्हारे दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम्हारे सखा ग्वालबाल ज़ोर-ज़ोर से तुम्हारी जय-जयकार कर रहे हैं। गौओं के रखवारे कृष्ण माखन और रोटी हाथ में लिए हुए तुम्हें साथ ले जाने को आतुर हैं। मीरा जी कहती हैं कि मेरे तो प्रभु गिरधर नागर हैं अर्थात् पर्वत को धारण करने वाले हैं। अपनी शरण में आने वाले प्रत्येक का उद्धार कर देते हैं।

2

बरसे बदरिया सावन की।
सावन की, मन-भावन की।।
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़-घुमड़ चहुँदिस से आया, दामिन दमकै झर लावन की।।
नन्हीं-नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सुहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर! आनंद-मंगल गावन की।।

शब्दार्थ : **बरसे**–बरसती है। **बदरिया**–बादल, मेघ, घटा। **मन-भावन**–मन को भाने वाला, अच्छा लगने वाला। **उमग्यो**–उमंग से भरा हुआ। **भनक सुनी**–आभास हुआ, उड़ती खबर सुनी। **हरि**–श्रीकृष्ण। **आवन**–आने की। **चहुँदिस**–चारों दिशाएँ, चारों ओर। **दामिन दमकै**–बिजली चमकती है। **झर लावन की**–वर्षा की झड़ियाँ लाने वाली। **नन्हीं-नन्हीं बूँदन**–छोटी-छोटी बूँदों वाली। **मेहा बरसे**–वर्षा होना। **शीतल**–ठंडी। **पवन**–हवा। **सुहावन**–प्रिय लगने वाला। **आनंद-मंगल गावन की**–सुखद और कल्याणकारी भावों की गायन करने योग्य।

व्याख्या–इस पद में मीरा ने प्रकृति चित्रण करते हुए वर्षा का वर्णन किया है। वे कहती हैं कि सावन के महीने में मनभावन वर्षा हो रही है। सावन के आते ही मन में उमंग जाग उठती है। उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक लग जाती है कि वे आने वाले हैं। बादल उमड़-घुमड़ कर चारों दिशाओं में फैल जाते हैं। बिजली चमकने लगती है, वर्षा की झड़ी लग जाती है। वर्षा की नन्हीं-नन्हीं बूँदें बरस रही हैं, पवन भी शीतल और सुहावनी लग रही है। इस प्रकार वर्षा ऋतु का मनोहारी दृश्य प्रस्तुत किया है। मीरा के प्रभु तो श्रीकृष्ण हैं। वे बादलों के आने के माध्यम से कृष्ण के आने की खुशी में मंगल गीत गाना चाहती हैं।